



## भारतीय पत्रकारिता में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पत्रकारिता का विश्लेषण

डॉ अरविंदकुमार दीक्षित

प्राचार्य

श्री रामनारायण दीक्षित स्नातकोत्तर महाविद्यालय श्री विजयनगर

जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान)

सार—

पत्रकारिता को सही ढंग से व विस्तृत रूप से समझने के लिए पत्रकारिता की सभी विधाओं को समझना या उनका अध्ययन करना आवश्यक है। पत्रकारिता पाठ्यक्रम से जुड़े शोधकर्ताओं के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे पत्रकारिता को बारीकी से समझने के लिए तथा उसमें अपने भविष्य को तलाशने से पहले उसका अध्ययन करें। इस शोध पेपर में आर्थिक तथा सांस्कृतिक पत्रकारिता की परिभाषा व उपयोगिता को संक्षिप्त रूप में वर्णित किया गया है। सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक पत्रकारिता से जुड़े कई पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। जिनका उद्देश्य सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक सरोकारों से जुड़े मुद्दे व सूचनाओं सम्प्रेषण का तथा उन पर चर्चा करना है।

प्रस्तावना—

सामाजिक पत्रकारिता—

मनुष्य शुरू से ही एक सामाजिक प्राणी माना जाता है। वह समूह में रहना पसंद करता है। समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ता है और जिंदगी बसर करता है। यह क्षेत्र राजनीति का हो सकता है। धार्मिक-सांस्कृतिक हो सकता है। या फिर कोई और। पत्रकारिता को समाज का आईना कहा जाता है। जैसा समाज में घटेगा, पत्रकारिता रूपी आईना उसे वैसे ही सामने रखेगा। समाज को पत्रकारिता ने दिशा देने की कोशिश की है। यह सिलसिला आज भी चल रहा है। मगर यह कहना उचित नहीं होगा, कि केवल पत्रकारिता ही समाज पर असर डालती है। बदलते सामाजिक माहौल का पत्रकारिता पर भी बड़ा असर पड़ता है। पत्रकारिता समाज में आए बदलाव से काफी हद तक प्रभावित होती है। पिछले दो दशकों के उदाहरण को सामने रखकर हम इस बदलाव को बहुत अच्छे से महसूस कर सकते हैं। पत्रकारिता में एक जमाने में ये सोचा जाता था, कि चाहे जैसी स्थिति हो, समाज को दिशा देने के अपने मूल कुर्य को छोड़ना नहीं है। उदाहरण के लिए अश्लीलता का तब मुखर विरोध करना होता था, तो पत्रकारिता ये करती थी। मगर जमाना तेजी से बदला, फैशन की शक्ल में ढलकर कब अश्लीलता ने समाज जीवन में मजबूती से अपनी जगह बना ली। कब उसे एक हद तक स्वीकार कर लिया गया, पता ही नहीं चला। समाज ने ये सारी बातें स्वीकारी, तो पत्रकारिता ने भी स्वीकार कर ली। आज की तारीख में देखा जा सकता है, कि तमाम कार्यक्रमों, विज्ञापनों के जरिये अश्लीलता परोसी जा रही है और पत्रकारिता कहीं ना कहीं इसके बढ़ावा देने में योगदान कर रहा है।

एक उदाहरण क्रिकेट का भी है। पत्रकारिता से सारे खेलों के प्रति समान नजरिये की अपेक्षा की जाती है।

मगर कोई भी ईमानदारी से बताए, कि आज की पत्रकारिता ऐसा कर रही है

या नहीं। मीडिया में क्रिकेट के बोलबाले के आगे अन्य खेल दब गए हैं। चूंकि क्रिकेट से जुड़े संघ बेहद अमीर हैं। क्रिकेट के अभ्यास मैच तक मार्केट में पैसे से सीधे जुड़ गए हैं। मीडिया का भी इसमें जुड़ाव है, इसलिए खेलों के नाम पर सिर्फ और सिर्फ क्रिकेट ही दिखलाई पड़ता है। इन सब बातों के बीच, फिर भी पत्रकारिता की सामाजिक भूमिका काफी अहम है, जिसका वह काफी हद तक निर्वहन कर रही है। सामाजिक पत्रकारिता के साथ धार्मिक-सांस्कृतिक पत्रकारिता का प्रायः जोड़ लिया जाता है। इसकी वजह है। समाज जीवन के साथ धर्म और संस्कृति का इतना प्रगाढ़ संबंध है, कि इन्हें अलग करके नहीं देखा जाता। मीडिया के किसी रिपोर्टर की बीट का कांभिनेशन बनाना हो, तो उसे अक्सर सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक रिपोर्टिंग एक साथ दे दी जाती है। दरअसल, भारत जैसे धार्मिक और सांस्कृतिक देश में समाज जीवन के साथ धर्म और संस्कृति को अलग करना एक हिसाब से नामुमकिन काम है।

धार्मिक और सांस्कृतिक पत्रकारिता पर विभिन्न संस्थाओं का वर्चस्व रहा है। यानी विभिन्न धार्मिक या सांस्कृतिक संस्थाओं के स्तर पर ही ज्यादातर ऐसी पत्रकारिता की गई। मगर अब यह मीडिया क्षेत्र की मुख्य धारा से जुड़ा विषय हो गया है। गांव-कस्बे तक धर्म संस्कृति के बड़े बड़े आयोजन होने लगे हैं। इन स्थितियों ने इस तरह की पत्रकारिता के लिए तमाम नई संभावनाओं को जन्म दे दिया है।

हमारे देश में पत्रकारिता की शुरुआत से लेकर इसके विकसित होने तक की प्रक्रिया में सामाजिक पत्रकारिता बेहद मजबूती से जुड़ी रही है। आजादी की लड़ाई में जिस वक्त पूरा देश जुटा था, तब भी इस तरह की पत्रकारिता ने बेहद कारगर साधन के रूप में अपनी भूमिका निभाई। कई महापुरुषों ने पत्रकारिता के जरिये भी समाज की आवाज को बुलंद किया। पत्रकारिता की सामाजिक भूमिका पर महात्मा गांधी ने बेहद सटीक अंदाज में तब कहा था कि किसी भी समाचार पत्र का पहला काम है लोगों के भावों को समझकर प्रकट करना। दूसरा काम है लोगों में जिन भावनाओं की आवश्यकता हो, उन्हें जागृत करना। तीसरा काम है कि लोगों में कोई दोष हो तो निर्भय होकर उसे सबके सामने रखना। आधुनिक पत्रकारिता के जनक राजा राममोहन राय ने मीरात उल अखबार में लिखा था—मेरा सिर्फ ये ही उद्देश्य है कि मैं जनता के सामने ऐसे बौद्धिक निबंध उपस्थित करूं, जो उनके अनुभव को बढ़ाने और सामाजिक प्रगति में सहायक सिद्ध हों। संपादकाचार्य पंडित बाबूराव पराड़कर के अनुसार, पत्रकारिता यानी तलवार की धार पर धापना है। समाज के जीवन में जिन पृष्ठों पर उचित निर्णयों की आवश्यकता होती है और जिन निर्णयों पर समाज का जीवन अंत में निर्भर रहता है, उनके बारे में जनता को योग्य जानकारी कराना, उनके संबंध में जनमत का निर्माण और नेतृत्व करना, उस मत को प्रकट करना तथा अधिक से अधिक लाभ जनता को पहुंचाना एक आदर्श पत्रकार का कर्तव्य है।

आज चाहे स्थितियां कितनी भी बदल गई हों, तब भी पत्रकारिता में सबसे पहला भाव सामाजिक पत्रकारिता का ही है। समाज हित की बात को आगे रखकर ही पत्रकारिता अपना काम करती है। हालांकि मीडिया संस्थानों

के भीतर की बात करें, तो दिखलाई पड़ता है कि राजनीतिक, आर्थिक, खेल, अपराध जैसे विषयों के लिए तो अखबारों, न्यूज चैनल्स में सर्वोच्च प्राथमिकता दिखाते हुए खास रिपोर्टर नियुक्त किए जाते हैं, मगर सामाजिक रिपोर्टर की अलग से नियुक्ति का अब भी चलन नहीं है। ना ही सामाजिक संपादक जैसा कोई पद मीडिया संस्थानों में दिखलाई पड़ता है। इसकी जरूरत शायद इसलिए भी महसूस नहीं होती, कि समाज जीवन क जितने भी विषय है, वह सामाजिक विषय के भीतर स्वतःस्फूर्त ढंग से शामिल हैं। उदाहरण के लिए कहीं से यह खबर सामने आए कि संपत्ति विवाद में एक बेटे ने अपने बाप को ही मार डाला है। तो प्रथम दृष्टया यह अपराध की ही खबर होगी; मगर इसके पीछे सामाजिक खबर के लिए पर्याप्त संभावना होगी। इन स्थितियों में संबंधित अखबार या न्यूज चैनल ये रिपोर्ट भी तैयार करा लेता है कि आखिर वह कौन से सामाजिक कारण हैं, जिनमें रिश्तों का खून होता है। देखा जाए, तो पत्रकारिता के लिए समाजोन्मुखी होना पहली शर्त है। यह उसके अस्तित्व और सम्मान के लिए अनिवार्य है। पत्रकारिता को एक सामाजिक संस्था माना जा सकता है। जिस तरह एक व्यक्ति, समुदाय समाजीकरण की प्रक्रिया से लगातार गुजरता है, ठीक वो ही स्थिति पत्रकारिता की भी है। समाजीकरण व्यक्तियों और उनके द्वारा निर्मित संस्थाओं दोनों का होता है। समाजीकरण की प्रक्रिया के दो घटक हैं। एक, सामाजिक क्रिया। दो, सामाजिक नियंत्रण। सामाजिक क्रिया के अंतर्गत व्यक्ति समाज के सदस्य के रूप में अपनी जरूरतों और अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए कार्य करता है। ऐसा करते हुए उसके अमर्यादित होकर समाज में अव्यवस्था फैलाने की आशंका भी रहती है। इसलिए समाजीकरण के दूसरे घटक यानी सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता पड़ती है। ये ही स्थिति पत्रकारिता के साथ भी जुड़ी है। पत्रकारिता भी हर दिन नया सीखते हुए अपनी जरूरतों और अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए काम करती है। एक स्थिति में उसके भी स्वच्छंद होकर कार्य करने की आशंका बन जाती है। इसलिए नियंत्रण की उसके लिए भी जरूरत महसूस की जाती है। वैसे, पत्रकारिता ने अपने जन्म से लेकर आज तक समाज में अपने को समायोजित करते हुए सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अहम भूमिका निभाई है। राजशाही के दौरान की बात करें, तो कई राजा जगह जगह उपदेश और आदर्श वाक्य लिखवाकर समाज हित में काम करते थे। उनका ये कर्म एक प्रकार से सामाजिक पत्रकारिता का ही हिस्सा होता था। सम्राट अशोक का इस संबंध में खास योगदान रहा, जिन्होंने ईसा से सैकड़ों वर्ष पूर्व स्तंभ लेखन की शानदार परंपरा की शुरुआत की। इससे पहले की बात करें, तो माना जाता है कि देवर्षि नारद ने पत्रकारिता की शुरुआत की। समाज हित में जगह जगह घूमने और सूचनाओं के आदान प्रदान ने देवर्षि नारद को पौराणिक कथाओं में एक विशिष्ट स्थान दिलाया है। भारत में आजादी के आंदोलन के दौरान सामाजिक पत्रकारिता के क्षेत्र में महापुरुषों ने उल्लेखनीय कार्य किया।

धर्म-मजहब, जाति, क्षेत्र की संकीर्णता छोड़कर पूरे देश को आजादी के आंदोलन के एक सूत्र में पिरोने का काफी बड़ा काम तत्कालीन सामाजिक पत्रकारिता ने किया है। भारतीय नवजागरण तथा समाज सुधार के अग्रदूत राजा राम मोहन राय ने कई पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों और अनुचित रीति रिवाजों को खत्म करने के लिए अभियान छेड़ा। गांधी जी ने अस्पृश्यता निवारण, जातिगत भेदभाव को दूर करने के लिए सामाजिक पत्रकारिता के माध्यम से उल्लेखनीय कार्य किया था।

सामाजिक पत्रकारिता करते वक्त संबंधित रिपोर्टर के लिए बड़ी चुनौती ये है कि व्यावसायिक दबाव झेलते हुए वह पुरजोर ढंग से समाज के हित की बात उठाए। जाने अनजाने कोई भी ऐसी बात वह सामने नहीं लाए, जो कि समाज का तात्कालिक या दीर्घकालिक नुकसान कर सकती हो। उसे संबंधित रिपोर्टिंग करते वक्त हर हाल में विश्वसनीय दिखना ही चाहिए। उसकी स्थिति छोटे-बड़े राजनीतिक दलों के उन नेताओं की तरह नहीं होनी चाहिए, जिन पर जनता का कतई विश्वास नहीं होता। हालांकि लगातार बढ़ते व्यावसायिक दबाव में ये करना बेहद कठिन है। फिर भी कुशल पत्रकार बीच का रास्ता निकाल लेते हैं।

### आर्थिक पत्रकारिता

आज की पत्रकारिता में किसी खबर या रिपोर्ट को पेश करते वक्त यह आकलन किया जाता है, कि उससे कितने लोग जुड़े हैं। जो सामग्री छापी जा रही है, उसका कितने लोग इंतजार कर रहे हैं और क्या प्रभाव पड़ सकता है। इस हिसाब से देखे, तो धार्मिक पत्रकारिता की अहमियत बहुत ज्यादा बढ़ गई है। श्री शिरडी धाम में साईबाबा को सोने का सिंहासन भेंट करने की खबर आती है, तो निश्चित तौर पर उन्हें आराध्य मानने वाले करोड़ों भक्तों का ध्यान इस पर जाता है। श्री बदरीनाथ धाम को केंद्रित कर लिखी गई कोई भी रिपोर्ट पूरी देश दुनिया का अपनी ओर ध्यान खींचती है। ये ही स्थिति देश के अन्य पवित्र धार्मिक स्थलों की है। धर्म को भले ही वामपंथी अफीम की संज्ञा देते हों, मगर यह सच है कि भारत जैसे देश में धर्म में आम आदमी के प्राण बसते हैं। उसका बहुत बड़ा विश्वास धर्म पर है, जो उसे अराजक होने से एक हद तक रोकता है। अच्छे रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित भी करता है।

देखा जाए, तो धर्म क्या है। धर्म से तात्पर्य है मनुष्य द्वारा स्वयं अपनाए गए सही आचरण के नियम और धर्मग्रंथों पर आधारित विचारधारा और सामाजिक संगठन। धार्मिक पत्रकारिता की शुरुआत की बात करें, तो ठीक ठीक ये बताना मुश्किल है, कि कब इस तरह की पत्रकारिता सामने आई। मगर यह तय है कि भारत में धार्मिक पत्रकारिता की गौरवशाली परंपरा रही है। धर्म के कल्याणकारी रूप को समाज के सामने प्रस्तुत कर धार्मिक पत्रकारिता क्षमा, दया, अहिंसा और सहिष्णुता की भावना का व्यापक प्रचार प्रसार कर सकती है। पत्रकारिता ने ऐसा किया भी है और कर भी रही है।

पौराणिक और ऐतिहासिक काल की तमाम घटनाओं पर नजर डालें, तो पता चलता है कि यह बहुत पहले से समाज जीवन के साथ जुड़ी रही है। सृष्टि के पहले पत्रकार के रूप में नारद की भूमिका को कई विद्वानों ने स्वीकार किया है। विश्व कोष तक में नारद की पत्रकार बतौर भूमिका को मान्यता दी गई है। विद्वान राम अवतार शर्मा के अनुसार, हिंदू संस्कृति में नारद का व्यक्तित्व आरंभिक पत्रकारिता के तत्वों से पोषित मिलता है। महाभारत काल की बात करें, तो इस जमाने में वातिकों का जिक्र मिलता है। प्राचीन चरित्र कोश के अनुसार, हालांकि वातिकों का कार्य युद्ध के वृतांत सुनाने का था, मगर कई मौकों पर उन्होंने एक हिसाब से धार्मिक पत्रकारिता भी की। दुर्योधन ने जब वैष्णव और युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किए, इन समारोह में मौजूद वातिकों ने सारे कुरु राज्य में ये सूचना दी। सम्राट अशोक ने अपने अभिलेखों में धार्मिक उपदेशों का प्रचार किया। उन्हें

कोने कोने तक प्रसारित करने के लिए उन्होंने खास तौर पर निर्देश दिए थे। सन् 1456 के गुरु वर्ग ने बाइबिल की 42 पंक्तियां छापीं। ईसाई मिशनरियों ने अपनी गतिविधियों को बढ़ाने के लिए धार्मिक पत्रकारिता का जमकर इस्तेमाल किया। भारतीय भाषाओं में दिग्दर्शन और समाचार दर्पण पत्र निकाले गए। इसके जवाब में राजाराममोहन राय ने ब्राह्मैनिकल मैगजीन निकाली। इसमें उन्होंने भारतीय मूल्यों का प्रचार प्रसार किया।

भारत में वर्तमान में धार्मिक पत्रकारिता की बात करें, तो आज की तारीख में हर अखबार और न्यूज चैनल संबंधित खबरों को प्राथमिकता दे रहा है। हिंदी के प्रमुख अखबारों में सप्ताह में एक दिन धार्मिक सामग्री के लिए पूरा पेज तय है। हालांकि अंग्रेजी पत्रकारिता में इसका अभाव दिखता है। कोई भी बड़े धार्मिक त्योहार और आयोजन से पहले ही धार्मिक खबरें बहुतायत में दिखाई देने लगी है। व्रत-त्योहार के लिए अखबारों में खास कॉलम शुरू किए गए हैं। इस बीच, हाल के कुछ वर्षों में धार्मिक संगठनों, गुरुओं की सक्रियता काफी बढ़ी है और गांव कस्बों तक में बड़े बड़े धार्मिक आयोजन होने लगे हैं। ऐसे में छोटे से लेकर बड़ी हर तरह की धार्मिक खबर अब अखबारों में दिखाई पड़ने लगी है। धार्मिक पत्रकारिता में कल्याण पत्रिका ने अपनी अलग जगह बनाई है।

धार्मिक पत्रकारिता से जुड़े पत्रकारों के लिए पहली शर्त ये है कि वह हर धर्म के बारे में गहनता से अध्ययन करें। संबंधित धर्म की मान्यताएं, परंपराएं, नियम आदि के बारे में संपूर्ण जानकारी हासिल करें। चूंकि धर्म एक बेहद संवेदनशील मामला है। इसलिए जरा सी भी चूक पत्रकार और उसके संस्थान के लिए भारी पड़ सकती है। भारत जैसे विभिन्न धर्म संप्रदाय वाले देश में तो ये और भी जरूरी है कि धार्मिक रिपोर्टर को हर धर्म की बुनियादी बातें जरूर पता हों। हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी, जैन और अन्य जितने भी धर्म हैं, उनके बारे में जानकारी के लिए उनके पुजारियों के साथ रिपोर्टर का अच्छा संपर्क जरूरी है। रिपोर्टिंग करते वक्त वह ऐसी बात को वह हमेशा नजरअंदाज करे, जिससे दो धर्म-संप्रदायों के बीच झगड़ा बढ़ने की आशंका हो। किस तरह के परिवर्तन होते जा रहे हैं, उसे इस पर निगाह रखनी चाहिए और बेहद संतुलित, संयमित ढंग से लिखना भी चाहिए। बेहतर स्थिति ये मानी जा सकती है कि धार्मिक रिपोर्टिंग करते वक्त हम ज्यादातर बातें संबंधित धर्म के पुजारियों को कोट करके ही लिखें। इसका सबसे बड़ा फायदा ये होगा, कि खबर में यदि संबंधित धर्म के अनुयायियों को कुछ नागवार भी गुजरता है, तो भी वह तीखी प्रतिक्रिया देने से इसलिए बचेंगे, क्योंकि उनका पक्ष उनके पुजारी के हवाले से आ चुका होगा।

### सांस्कृतिक पत्रकारिता

भारत की पहचान शुरू से सांस्कृतिक चेतना से ओत प्रोत देश के रूप में रही है। संस्कृति की जितनी विशेषता भारत के संदर्भ में देखने को मिलती है, शायद ही ऐसा कोई देश हो। संस्कृति देश में एक बड़ी बहस का विषय भी हमेशा रहा है। जीवन दर्शन तो ये है ही। किसी भी देश के नागरिकों के जीने का ढंग संस्कृति है। वेशभूषा, रीति रिवाज, परंपराएं, भाषा, मान्यताएं, इतिहास, आचार विचार आदि तमाम पहलुओं से संस्कृति उभरकर सामने आती है। भारत में संस्कृति का निर्माण धर्म, क्षेत्र और जातीयता के आधार पर हुआ है। भारत पर समय

समय पर विदेशी हमले होते रहे। इस वजह से यहां के समाज जीवन पर विभिन्न संस्कृतियों की झलक साफ दिखलाई पड़ी है। आर्य संस्कृति को यहां सबसे प्राचीन माना जाता है। पहले मुसलमानों का हमला और बाद में सालों साल अंग्रेजी साम्राज्य की वजह से भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण में बहुत बड़े बदलाव आए। ये ही वजह रही, कि आजादी के संघर्ष के दौरान पत्रकारिता ने जहां राजनैतिक, कूटनीतिक पत्रकारिता कर अंग्रेजी साम्राज्य पर दबाव बनाने का काम किया, वहीं, सांस्कृतिक चेतना के प्रसार का जिम्मा भी अपने कंधों पर लिया। आजादी के बाद भारत में सांस्कृतिक पत्रकारिता की बहुत बड़ी जरूरत महसूस की गई है। देश पर लंबे समय तक अंग्रेजी शासन का प्रभाव हमारी मानसिकता पर कहीं ना कहीं पड़ा है। इसके अलावा आज भी ये बात की जाती है कि लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति से भारत उबर नहीं पाया है। इस कारण यहां शिक्षा का वो स्वरूप सामने नहीं आ पाया है, जो कि भारत जैसे एक सांस्कृतिक देश में अपेक्षित है। इन सब बातों ने भारत के सांस्कृतिक मूल्यों को नुकसान पहुंचाने की कोशिश की है। अंग्रेजी मानसिकता से कहीं ना कहीं भारत का जनमानस आज भी जकड़ा हुआ है। पिछले कुछ सालों में सूचना क्रांति का विस्तार भले ही जनमानस के लिए वरदान साबित हुआ हो, मगर भारतीय संस्कृति पर पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव को इससे और गति मिली है। सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित भारतीय समाज में तमाम उन बातों ने जगह बनानी शुरू कर दी है, जिनके लिए पहले कहीं कोई जगह नहीं निकला करती थी। हिंसा और सेक्स जैसे विषयों के वर्चस्व ने भारतीय सांस्कृतिक ताने बाने को तहस नहस करना शुरू कर दिया है। टीवी और फिल्मों का भारतीय समाज पर बहुत हद तक प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। समाज में सीधे सीधे दो वर्ग आमने सामने दिखाई पड़ते हैं। एक वर्ग है, जो पुरानी भारतीय संस्कृति के साथ रत्ती भर छेड़छाड़ होते नहीं देखना चाहता। वहीं दूसरा वर्ग, आधुनिकता के नाम पर खुलेपन का कट्टर पक्षधर है। मौके-बे-मौके इन दोनों वर्गों के बीच संघर्ष की स्थिति दिखाई पड़ती है। वेलेंटाइन डे पर हर साल इस तरह का संघर्ष अब आम बात हो गई है। चूंकि समाज का भी पत्रकारिता पर गहरा असर पड़ता है। साथ ही पत्रकार भी इसी समाज से पत्रकारिता में आता है। ऐसों में इन दो वर्गों में कहीं ना कहीं वो भी बंटा दिखाई पड़ता है। इसीलिए संस्कृति के सवाल पर पत्रकारिता और पत्रकारों का दृष्टिकोण एक सा नहीं दिखता।

भारतीय और अन्य देशों के सांस्कृतिक दर्शन में जमीन आसमान का सा अंतर है। खास तौर पर पाश्चात्य सभ्यता वाले देशों के लिए भौतिक प्रगति ही जीवन में सब कुछ है। इसके विपरीत, भारतीय संस्कृति में भौतिक प्रगति को गौण समझा जाता है। ईश्वर, मोक्ष, नैतिकता ये सब भारतीय संस्कृति के भीतर कहीं गहरे तक विद्यमान है। देश की पत्रकारिता एक जमाने में भारतीय संस्कृति के इस स्वरूप अडिग नजर आती थी। मगर पत्रकारिता के पेशे में तब्दील होने का असर रहा है कि संस्कृति से जुड़ी तमाम बातें मीडिया के एक वर्ग को दकियानूसी लगने लगी है। संस्कृति से जुड़ी तमाम सारी बातें जाने अनजाने उनके निशाने पर आ रही है। हालांकि इन सब बातों के बाजूबद, सांस्कृतिक पत्रकारिता के महत्व से कोई इनकार नहीं कर सकता है। हालांकि ये भी सच्चाई है कि आज भी पत्रकारिता की मुख्य धारा में सांस्कृतिक पत्रकारिता पूरी तरह रच बस नहीं पाई है।

धर्मयुग पत्रिका की शुरुआत के दौरान उसके संपादक धर्मवीर भारती ने एक साक्षात्कार में सांस्कृतिक पत्रकारिता के बारे में जो कुछ कहा, उसे नई पीढ़ी के पत्रकारों को जरूर जानना चाहिए। धर्मवीर भारती से एक संपादक के रूप में उनके उद्देश्य पूछे गए थे। उन्होंने कहा कि साधारण से साधारण पाठक गहरे सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूक होकर जीवन के जटिल संघर्ष का सामना करने योग्य बनता चले। पाठक को धर्मयुग से ज्ञान, जीवन दृष्टि और आस्था मिले। ये स्थिति बताती है कि बीस साल पहले सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति कोई संपादक कितना संजीदा होता था। आज की स्थिति में सांस्कृतिक पत्रकारिता की बातें तो होती हैं, मगर इसका सैद्धांतिक पक्ष ही ज्यादा दिखाई पड़ता है। आज ज्यादातर बड़े संपादकों के लिए समाचार एक प्रोडक्ट बन गया है। रिपोर्टों से हर दिन उनकी बिकाऊ खबर लाने की अपेक्षा रहती है। इन स्थितियों में समझा जा सकता है कि सनसनी की तलाश में जुटा मीडिया संस्कृति की बात को कितने आगे ले जाएगा। हालांकि एक बड़े वर्ग का सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़ाव, इस तरह के खबरों की अपेक्षा, पत्रकारिता के सामाजिक दायित्व और सरकारों के एजेण्डे में संस्कृति विषय को प्राथमिकता कुछ ऐसे कारण है, जिनके चलते मीडिया को इस तरह की पत्रकारिता पर भी ध्यान देना पड़ रहा है।

अखबारों और न्यूज चैनलों में अलग से सांस्कृतिक रिपोर्टर रखे जाने लगे हैं। अच्छी स्थिति बड़े शहरों में है। कस्बों और गांवों में आज भी सांस्कृतिक पत्रकारिता सिर से गायब दिखती है। वहां का रिपोर्टर अपराध, राजनीति या अन्य विभागों की खबरों में ही उलझा रहता है। वरिष्ठ पत्रकार आलोक मेहता का मानना है कि पत्रकारों को अपने आस पास बिखरी सांस्कृतिक विरासत को देखना और अपने पाठकों को दिखाना होगा, तभी संस्कृति के बारे में निरंतर विकृत होती जा रही अवधारणा को ठीक करने का मौका मिलेगा। जहां तक सांस्कृतिक रिपोर्टर में अपेक्षित विशेषताओं का सवाल है, उसे संस्कृति के मूलभूत तत्वों की जानकारी होनी ही चाहिए। उसका भाषा शैली बेहतरीन होनी जरूरी है, तभी वह संस्कृति का सुंदर संसार जनसामान्य के सामने ला पाएगा।

### निष्कर्ष—

सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पत्रकारिता की भारत में आजादी से पूर्व और उसके बाद लगभग मिलती जुलती स्थिति दिखाई पड़ती है। आजादी के आंदोलन के दौरान राजनैतिक पत्रकारिता के अलावा इन तीनों तरह के विषय खूब उठाए गए। इन विषयों पर आधारित पत्रकारिता की बंदौलत ही उस जमाने में राजनैतिक आंदोलन से इतर, कई सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आंदोलन भी हुए और जनमानस पर उसका गहरा असर पड़ा। स्वतंत्र भारत में पत्रकारिता अब उस स्थिति में आ गई है, जब हर विषय की मार्केट में हैसियत तोली जा रही है। उसी के अनुरूप उसे पेश किया जा रहा है। ऐसे में कई बार ऐसी स्थिति आती है, जब सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पत्रकारिता को बहुत ज्यादा महत्व मिल जाता है। इसके विपरीत, ऐसी स्थिति भी आती है, कि इन तीनों विषयों से जुड़ी खबरें हाशिये पर रहती है। आश्वस्त करने लायक बात यह है कि चाहे वो आम आदमी हो या फिर सरकार, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विषयों को नजरअंदाज करने की स्थिति में कोई नहीं है। इसकी बहुत बड़ी वजह भी है। दरअसल, ये तीनों ही विषय हर व्यक्ति पर असर

डालते हैं। इनसे व्यक्ति का रोजाना का वास्ता है और पीढ़ी दर पीढ़ी इससे व्यक्ति जुड़ा हुआ रहा है। इन तीनों विषयों को समाज जीवन से निकाल दिया जाए, तो फिर बहुत कुछ शेष नहीं रह जाता है। इसलिए तमाम तरह की स्थितियों के बावजूद पत्रकारिता में इन विषयों की अहमियत लगातार बनी हुई है।

### संदर्भ ग्रन्थ सूची—

- आसोपा, आरके, मारवाड़ का मूल इतिहास भाग-1, वैदिक यंत्रालय, अजमेर , 1938
- आर्य, हरफूल सिंह, शेखावाटी के ठिकानों का इतिहास व योगदान, जयपुर, 2021
- कोठारी, मनोहर, भारत में स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान (राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के अमर पुरोधे), राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2001
- गोयल, सौभाग्य, अजमेर में जन आन्दोलन, अग्रसेन प्रकाशन, अजमेर, 2014
- चौधरी, रामनारायण, बीसवीं सदी का राजस्थान, कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, 1980
- जोशी, रामशरण, मीडिया : मिशन से बाजारीकरण तक, प्रकाशक वाग्देवी प्रकाशन, पहला संस्करण, 2008
- जोशी, सुशीला, हिन्दी पत्रकारिता का आलोचनात्मक इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1986
- भंडारी, मोहनराज, राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के अमर पुरोधे—रामनारायण चौधरी, राजस्थान स्वर्ण जयन्ती समारोह समिति, जयपुर, 2001
- त्रिपाठी, कमलापति, पत्र और पत्रकार कला, बनारस, 2005